DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
ADAT VYAPAR EDUCATION SOCIETY'S

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - II / Hindi Part - I

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	संस्कृत साहित्य की सद्यस्थिती **मयुरी ऋषिकेश मोरे**	१-५
२	तैत्तिरियोपरिषदे लोकोपयोगिनी शिक्षा **प्रा. गायकवाड पी. बी.**	६-९
३	स्त्री अपराजिता : सर्घष से सफलता की और **डॉ. शिवाली अग्रवाल**	१०-१४
४	राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन **डॉ. संजीव सी. शिरपूरकर**	१५-२०
५	महाभारताकालिका राजनीतिः सार्वकालिका **Dr. Ramesh T.S.**	२१-२८
६	महिला सशक्तीकरण कब होगा? **डॉ. बिना मधुकर मून**	२९-३१
७	हिन्दी सिनेमा और समकालीन समय **प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे**	३२-३५
८	सलाम आखिरी : महानगरीय वेश्या जीवन की त्रासद गाथा **डॉ. समुख नागनाथ मुच्छटे**	३६-४०
९	हिन्दी उपलब्धि प्राप्तांकों के आधार पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन **संगीता दिवाकर**	४१-४७
१०	कर्पूर मंजरी (नाटक) सट्टक का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **नवरतमल काळुराम जैन**	४८-५३

Scanned by CamScanner

७. हिन्दी सिनेमा और समकालीन समय

प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे
सहा. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर.

भारत में सिनेमा का निर्माण एक शताब्दी पूरी कर चुका है | यदि हिंदी सिनेमा की शुरुवात हम सवाक फिल्मों (टॉकी) से ही मानें तो भी ८६ वर्ष पूरे होने को है | क्योंकी पहिली सवाक फिल्म आलमआरा -१९३१ ई. में प्रदर्शित हुई थी | इन ८० वर्षो में हिन्दी सिनेमा ने कथ्य से लेकर तकनीक तक सभी पक्षों में एक लम्बी दूरी तय की है | और उसका खासा विकास भी हुआ है | संख्या की दृष्टी से भारतीय फिल्म उद्योग अमेरीकी फिल्म उद्योग हॉलीवुड से भी बडा है | यानी दुनिया में सबसे बडा कारोबार है | २०१५ में मनोरंजन उद्योग का सालाना कारोबार ५०,०००-६०,००० करोड रुपए तक पहुँच गया है | अब अनुमान यह है की, अगले पाँच सालों में इसका कारोबार दो गुना बढनेवाला है |

अपने प्रारंभिक दौर में जहाँ सिनेमा वैदिक-पौराणिक आख्यान, धर्म और नैतिकता, ऐतिहासिक प्रसंग तथा हल्के-फुल्के सामाजिक संदर्भो एवं कुरीतियों तक सीमित रहा है | वही इस तथ्य को भी नकारा नही जा सकता है | भारत में अंग्रेजी राज्य के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन ने समाज में जो राष्ट्रीय चेतना की लहर पैदा की थी १९३० के आस-पास उनमें से एक लहर राष्ट्रीय सिनेमा की थी |

राष्ट्रीय सिनेमा की यह धारा कमजोर भले ही रही है | लेकिन गैर महत्वपूर्ण कदापि नहीं थी | एक तरफ जहाँ हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व सिनेमा की शक्ति से प्रायः अनभिज्ञ था और उसे उपेक्षित दृष्टि से देख रहा था | वही दूसरी तरफ प्रथम विश्व युध्द के दौरान हुए अपने अनुभवों से अंग्रेजो ने सिनेमा की ताकत को अच्छी तरह से पहचान लिया था |

हिन्दी सिनेमा में आज समकालीन समय का यथार्थ चित्रण दिखाया जाता है | जिस तरह से साहितय समाज का दर्पण होता है | उसी तरह आज हिन्दी सिनेमा समाज का प्रतिबिंब दिखा रहा है | कुछ हिन्दी सिनेमा ऐसे है जो समाज का वास्तविक चित्रण दिखाकर करोडो रुपये कमा रहे है |

आज सामाजिक समस्या पर हिन्दी में हमे बहुत सारी सिनेमा देखने को मिलते है | शिक्षा कि समस्या पर आज हिन्दी सिनेमा में हमारी शिक्षा पध्दतीपर करारा व्यंग किया है | उसी तरह धार्मिक संदर्भ पर बहुत सारी हिन्दी सिनेमा आज हमें हमारी धर्म व्यवस्था की जानकारी देते है | और राजनितीक प्रश्न भी आज सिनेमा द्वारा हमारी राजनीति से रुबरु कराती है | ऐतिहासिक फिल्मो द्वारा हमारी ऐतिहासिकता हमे मालुम होती है | ऐसी सिनेमा से दिग्दर्शक बहुत पेसा कमा लेता है | नक्षलवाद और आंतंकवाद को भी हिन्दी सिनेमा के माध्यम से इस समस्या को दुनिया के सामने लाने का प्रयास हिन्दी

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

सिनेमा करता हे | प्रेम का चित्रण आज बढे पैमाने पर हिन्दी सिनेमा में दिखाया जाता है | प्रेम का विद्रुप रुप और एकतर्फी प्रेम के परिणाम भी हिन्दी सिनेमा में दिखाऐ जाते है | आज प्रेम का इस स्वरुप किस तरह से बदल गया है | क्षणभंगूर प्रेम के कितने घातक परिणाम हो रहे है | यह हिन्दी सिनेमा में बढे पैमाने पर दिखाया जा रहा है |

१) आज की शिक्षा मे समकालीन समय

आज हमारी शिक्षा पध्दती कैसी हे, यह हिन्दी सिनेमा के माध्यम से दिखाया जाता है | शिक्षा का स्तर आज सख्यात्मक दृष्टी से बढ गया है | लेकिन गुणात्मक दृष्टिसे गिर गया हे | यह हमने हमारे हिन्दी सिनमा में देखा है | जैसे - थ्री इडियटस और तारे जमीन पर इस सिनेमा के माध्यम से अमीरजी ने हमारी शिक्षा पध्दती पर करारा व्यंग्य करते हुऐ हमे किस तरह से ज्ञान अर्जित करना चाहिए | इन सिनेमा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है | आज हमारे महाविद्यालय और विश्वविद्यालय छात्रों को बनाने का काम छोडकर उन्हे किस तरह अद्योगति की तरफ ले जाने का काम हो रहा है | इससे हमारी वत्तियों में किस तरह से गिरावट हुई हे और विकृत रुप छात्रो का हमे देखने को मिलता है | इससे समाज और देश को खामियाना भोगतना पड रहा है | परिक्षा पध्दती हो या रट -रटकर अध्ययन करता है इससे जो हमे ज्ञान मिलता है, वह अब व्यवहारिक रुप में हम ला नही सकते हैं | फिर ऐसी शिक्षा पध्दती से मालुम होता है कि, हम छात्रो को बना रहे है | या मशीनीछात्रों को बनाने का काम कर रहे है | यह हिन्दी सिनेमा द्वारा बताने प्रयास किया गया है | उसी तरह से मराठी सिनेमा शिक्षणाच्या आईचा घो एवं शाळा, चिल्ल पार्टी आदि समस्या को उजागर करने का प्रयास करते है |

इस तरह से आज हिन्दी सिनेमा के माध्यम से आज के समकालीन समय की शिक्षा पध्दती कैसी है | उसे उजागर करने का प्रयास करती है |

२) आज का सामाजिक समकालीन प्रश्न

आज के हिन्दी सिनेमा में सामाजिक समकालीन प्रश्न को उठाने का काम हिन्दी सिनेमा बढे पैमाने पर करता है | जैसे - पेज -३, लज्जा, ट्राफिक सिग्नंल, दंगल, टायलेंट - एक प्रेमकथा -

इन सिनेमा के माध्यम से अलग -अलग सामाजिक प्रश्नों पर हिन्दी सिनेमा प्रकाश डालता है|

जैसे पेज ३, लज्जा, ट्राफिक सिग्नंल इस सिनेमा के माध्यम से दिग्दर्शक ने बहुत सारी सामाजिक प्रश्नों को उठाने का प्रयास किया है | जैसे बाल अत्याचार, बाल शोषण, अनैतिक संबंध, विधवा स्त्री की कहानी, गुन्हेगारी आदि समस्या पर पेज ३ एवं लज्जा सिनेमा में दिखाने का प्रयास किया गया है | आज हमारे देश की वस्तुस्थिती केसी है | समकालीन परिवेश केसा है | यह इस सिनेमा से दिखाया गया है |

ट्राफिक सिग्नल में आज हमारी यातायात व्यवस्था कैसी है | उससे क्या परिणाम होते है यह इन फिल्मो से दर्शाया गया है | दंगल इस सिनेमा मे हमारी पुरुषसत्ताक प्रवृत्तीयों उठाने का प्रयास किया गया है | समाज में लडका और लडकी के साथ किस तरह से समाज और घर में भेदभाव किया जाता है | और लडकया भी आज लडको से कम नहीं है | इस सिनेमा में दिखाने का प्रयास किया है | टॉपलेट - एक प्रेमकथा - इस सिनेमा के माध्यम से बहुत अच्छा सामाजिक संदर्भ लिया गया है | घर में

Scanned by CamScanner

शोचालय न होने के कारण स्त्रीयों को किस तरह से अलग - अलग समस्या का सामना करना पडता है | परिवार की सोच कैसी रहती है | यह इस सिनेमा से आज का समकालीन समय की यथार्थता व्यक्त की है |

३) समकालीन धार्मिक प्रश्न

आज हिन्दी सिनेमा के माध्यम से समकालीन धार्मिक प्रश्नों को उठाने का प्रयास हिंदी सिनेमा बढे पैमाने पर करता है - जेसे P.K. इस सिनेमा के माध्यम से हर समाज में, हर धर्म, हर पन्त में, हर सम्प्रदाय और हर जाती में आज समकालीन समय में बढे पैमाने पर अंधश्रध्दा बढती ही जा रही है | आज जितना आदमी पढा लिखा होता है | उतना ही अधिक धार्मिक बनता जा रहा है | धर्म के नाम पर आज समकालीन समय में शोषण , अन्याय-अत्याचार बढे पैमाने पर बढा है | यह इस सिनेमा में आज का प्रासंगिक चित्रण व्यक्त किया है जेसे OMG - इस सिनेमा से आज धर्म के नाम पर अर्थकारण कैसे किया जाता है यह अलग - अलग सन्तों से बताया गया है |

आज हिन्दी सिनेमा में धार्मिक प्रश्नों को बढे पैमाने पर उठाया जाता है | लेकिन असली जिंदगी में उसका कोई भी अनुकरण नही कर रहा है | इसलिए यह दुनिया भी आज फिल्मी दुनिया बनी है | मराठी सिनेमा हो या हिन्दी सिनेमा अपने सिनेमा धार्मिक चेतना जागृत करने का प्रयास करते है | लेकिन उसका असर समाज पर नहीं पड रहा है | जैसे - सेराट, फँन्ड्री, बाजीराव मस्तानी, हिना, गदर - एक प्रेम कथा आदि मराठी हिन्दी सिनेमा ओं मे समकालीन धार्मिक प्रश्नों को उठाने का प्रयास किया गया है |

४) समकालीन राजनीति

आज हमारी कैसी राजनिती है | यह हमारे हिन्दी सिनेमाओं में देखने को मिलता है | किस तरह से हमारी राजनीति का स्तर निचे गिरा है और आज राजनीति की संज्ञा ही बदल गई है | समाजकारण की जगह स्वार्थकारण (अर्थकारण) ने जगह ली है | इसका समाज और देश के उपर असर हो रहा है |

आज समकालीन समय में हमारी राजनीति कैसी है | यह हिन्दी सिनेमाओं में बढे पैमाने पर दिखाया जाता है | जैसे - नायक, गंगाजल, राजनिती, सरकार, परवाना, सिंघम, राऊणी राठौर, दिलजले आदि फिल्मों मे हमारी आज की राजनिती और राजनेता कैसे है | यह अच्छी तरह से दिखाने का प्रयास किया गया है | उसी तरह मराठी सिनेमा गल्लीत गोंधळ दिल्लीत मुजरा इस सिनेमा से हमारी इसानों की प्रवृत्ती कैसी है | हम आज भगवान को भी झूट बोल रहे है यह दर्शाया गया है |

इन हिन्दी सिनेमाओं के माध्यम से आज की हमारी राजनिती किस तरह से बदल गयी है | यह दिखाया है | आज सबसे ज्यादा अन्याय-अत्याचार , शोषण, गुन्हेगारी यह हमारे राजनेता लोग ही कर रहे है | ऐसे लोगो से ही आज हमारा भारत माता का मंदिर (संसद भवन) भरा पडा है | तो कैसी हमारे देश की उन्नती होने वाली है | इस तरह आज के समकालीन समय में हिन्दी सिनेमा द्वारा आज की राजनिती दिखाने का प्रयास किया गया है |

Scanned by CamScanner

५) समकालीन प्रेमचित्रण

आज हिन्दी सिनेमा तो ७० फिसदी प्रेम चित्रण के उपर ही रहते है | किस तरह से आज प्रेम की संज्ञा ही बदल गयी हे | आज प्रेम का रुप, स्वरुप किस तरह से बदल गया है | हम इन सिनेमाओंसे देख लेते है | क्षणभंगूर प्रेम का क्या परिणाम हो रहा है | किस तरह से, समाज में विकृत मानसिकता पैदा हो रही है | प्रेम को कालसीमा (वय मर्यादा) नही रहती है | यह भी हम अब ५-६ कक्षा के बच्चे से सिख रहे है | और ७० साल बुढा ३० साल की लडकी से किस तरह प्रेम संबंध स्थापित करता है यह, हमे चिनी कम इस अमिताभ की सिनेमा से जान लेते है |

आज हिन्दी सिनेमा में प्रेम का रुप अश्लिलता ने लिया है | अश्लिलता की वजह से छोटे बच्चे पर किस तरह गलत परिणाम हो रहे हमें ५-६ कक्षा में ही दिख रहे है |

आज किस तरह से प्रेम से किसने नौजवानों की जिंदगी बर्बाद हो रही है | हमने आशिकी इस सिनेमा से देख लिया है | आज हिन्दी के कुछ सिनेमाओं में प्रेम चित्रण कहा अच्छा होता है , तो कही बुरा नजर आता है | जेसे आशिकी, धडकन, मन, वीर-जारा , हम आपके है कौन, हम साथ साथ है, तेजाब, बेटा, दिल तो पागल है, मोहब्बते आदि सिनेमाओं आज का प्रासंगिक प्रेम कैसा है | यह दिखाया गया है | आज प्रेम भावनिक कम और शारिरिक ज्यादा हुआ है |

६) नक्षलवाद एवं आतंकवाद का प्रश्न

आज हिन्दी सिनेमा नक्षलवाद और आतंकवाद इसके उपर ज्यादा सिनेमा बनाते है, और बढा - चढाकर दिखाकर करोडो रुपयें कमाते है |

नक्षलवाद और आतंकवाद इस समस्या को हिन्दी सिनेमा में शोले, दिलजले, सरफरोश, इंडियन, वॉन्टेड, तिरंगा, कर्मा आदि सिनेमाओं से इस प्रश्न को उठाने का काम हिन्दी सिनेमा ने किया है |

किस तरह आज आतंकवाद और नक्षलवाद भारत को भितर से ही खोखला कर दे रहा है | इससे हमारी देश की क्या दशा हो रही है सिनेमाओं से दिखाया गया है | आज हमारे अपने ही लोग नक्षलवादी और आतंकवादीयों के साथ जुड जाते है और गलत-गलत कामों को अनजाम देने का प्रयास करते है | इससे हमारी किस तरह से शारिरिक, मानसिक, आर्थिक, राजनितीक हानी होती है | यह भी इन सिनेमाओं से दिखाने का प्रयास किया है |

इस तरह से आज हिन्दी सिनेमाओं में हमारी देश मे समकालीन परिस्थिती को अलग - अलग हिन्दी सिनेमाओं मे दिखाने का प्रयास एक फिल्मकार कर रहा है | आज की प्रासंगिक बाते सिनेमा में देखकर हमे उस समस्या को निराकार करने का हमे भी प्रयास करना चाहिए |

Scanned by CamScanner

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta1977@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

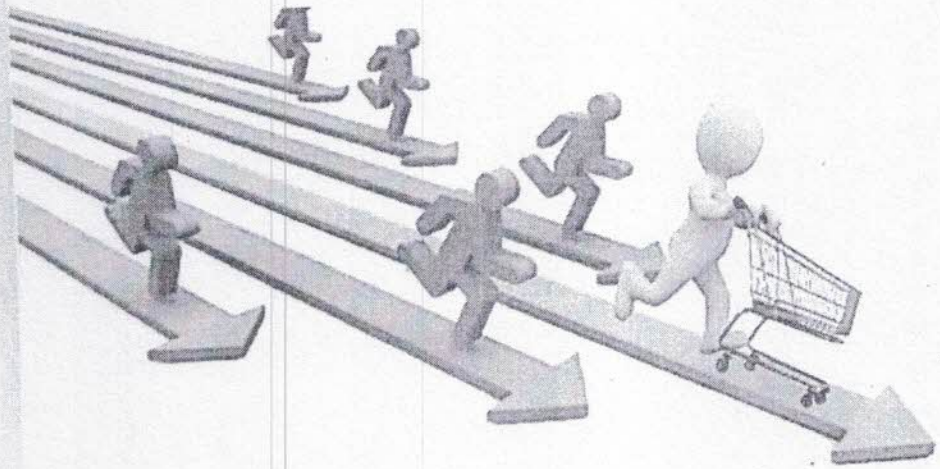

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner